मत्ती ईसोपदेश 15 : 21 - 28

जब यीशु सूर और सौदा क्षेत्र के समीप गए, तो कनानी महिला चिल्लाकर कहने लगी "महोदय, प्रभु दाउद के पुत्र, मुझ पर दया कीजिए। मेरी पुत्री दुष्टात्मा द्वारा उत्पीड़ित की जा रही है।" उसके बाद महिला यीशु के पैरों पर घुटनों के बल बैठ गई और विनती करने लगी "प्रभु, मेरी सहायता जिए।" यीशु ने महिला से कहा "औरत तुम्हारा विश्वास बहुत मजबूत है, तुम्हारी इच्छा पूरी होनी है" और उसी के बाद उसकी पुत्री पहले की तरह ठीक हो गई।

हमेशा नहीं, परन्तु लगभग हमेशा, जब यीशु लोगों का उपचार करते थे, तो वह एक विश्वास से की गई प्रार्थना का उत्तर देते थे। अगर मेरा विश्वास मजबूत है, यीशु मेरी और सहायता कर पाएगें। बिलकुल वैसा जैसे कोई तैरना सीख रहा हो : जितना ज्यादा भरोसा और विश्वास उसे अपने उपदेशक पर होगा, उतना ही शीघ्र और बेहतर वह तैरना सीखेंगा। दूसरी तरफ विश्वास/भरोसा नहीं, तैरना नहीं।

यीशु कृपया मेरे विश्वास को बढ़ा!